वसन्त पर्व के दिव्य अनुदानों को सँजोने, सार्थक बनाने के लिए तैयार हों
युगशक्ति उल्लसित है देने के लिए, संघशक्ति तत्पर हो लेने के लिए

नया उभार-नया संचार

लगता है इस बार वसंत का प्रवाह हमारी झोली में कुछ खास अनुदान डालकर ही जायेगा। क्यों?

क्योंकि इस बार हमारी छोटी-बड़ी संगठित इकाइयों में कुछ नया उभार आया है। इसके दो स्पष्ट प्रमाण दिखाई दे रहे हैं।

१.आयोजनों की संख्या :- क्षेत्रीय संगठनों से यह अपील की जाती रही है कि अपने क्षेत्र की गहराइयों तक पहुचें और उसके लिए अपने क्षेत्र से भी समयदानी निकालें। इस बार केन्द्र और क्षेत्र के संयुक्त प्रयासों का यह परिणाम है कि लगभग प्रत्येक न्याय पंचायत क्षेत्र में पंच कुण्डीय यज्ञ करने का तंत्र विससित हो गया है। ऐसे यज्ञों की संख्या २४००० का आँकड़ा पार कर रही है। इसके लिए कम या अधिक समय दे सकने वाले समयदानियों को क्षेत्रों को खोजने और प्रशिक्षित करके जिम्मेदारी सौंपने में सफलता मिल गई है।

बेहतर तालमेल का एक प्रमाण यह भी है कि सभी आयोजनों के समन्वयक किसी न किसी पंजीकृत संस्थान की प्रामाणिक रसीदों का ही उपयोग कर रहे हैं। इससे संगठन की आर्थिक प्रामाणिकता तथा उसके प्रति जनता के विश्वास में बढ़ोत्तरी हुई है। इसका प्रमाण अगले दिनों जन-जन के खुले सहयोग में वृद्धि के रूप में सामने आयेगा।

२. युग साहित्य का विस्तार :- युग साहित्य, युग विचार का-विचार क्रान्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है। आयोजकों से यह आग्रह किया जाता रहा है कि यज्ञायोजनों के बजट का एक हिस्सा 'ज्ञानयज्ञ'-युग साहित्य के विस्तार के लिए भी नियत रहना चाहिए। इस बार विद्या विस्तार सैटों की स्थापना और युग साहित्य के मेलों के माध्यम से परिजनों ने इस कार्य को सराहनीय स्तर पर उठा लिया है।

उक्त दोनों ही प्रकरणों में क्षेत्रीय परिजनों-संगठित इकाइयों ने जिस जिम्मेदारी का परिचय देना शुरू किया है, उससे ऋषि सत्ता की कसौटी पर उनका मूल्यांकन निश्चित रूप से बढ़ने ही वाला है। इस मूल्यांकन के आधार पर युग शक्ति के अनुदानों का स्तर भी बढ़ना है। हमारे सामने अब प्रश्न एक ही है कि क्या यह अनुदान बरसात के पानी की तरह बाढ़ में यों बह जायेंगे या हम उन्हें सँजोकर-सँवारकर श्रेष्ठ प्रयोजनों में प्रयुक्त कर पाएँगे?

चूकें नहीं, लाभ उठाएँ

वर्षा का पानी हमारी वर्ष भर की जरूरतों को पूरा कर सकता है, बशर्ते उसे यूँ ही न बह जाने दिया जाय। खेतों की मेड़बन्दी से लेकर पोखरों, तालाबों, कुँए आदि का निर्माण इसी लिए किया जाता है कि वर्षा का जल उनमें इकट्ठा होकर धरती की और प्राणियों की प्यास बुझाता रहे। युगशक्ति के अनुदान बरसेंगे तो अवश्य; यदि हम उन्हें सँजोने, सँभालने, प्रयुक्त करने की तैयारी कर लें, तो बात बन जाय। हमें वाञ्छित लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए शक्ति-संसाधनों की कमी न पड़े। हम भी गौरव का अनुभव करें और गुरुसत्ता की आँखें भी हमें लाभान्वित होता देखकर चमक उठें।

गुरुदेव कहते रहे हैं कि दिव्य अनुदानों को कल्पनाओं-कमनाओं में नहीं बाँधा जा सकता है। उसके लिए सत्संकल्पों और सत्प्रवृत्तियों को विस्तार देना पड़ता है। इन्हीं पात्रता एवं प्रामाणिकता के आधार पर अनुदान प्राप्त और प्रयुक्त किए जाते रहे हैं। इसीलिए वे बार-बार यह तथ्य हम सबको समझाते रहे हैं कि 'कामनाएँ' कभी पूरी नहीं होतीं और 'संकल्प' कभी अधूरे नहीं रहते।

तो कैसे होने चाहिए हमारे संकल्प और क्या होनी चाहिए हमारी प्रवृत्तियाँ, जिनके सहारे हम दिव्य अनुदानों की वर्षा का समुचित लाभ उठा सकें?

अगले सत्र में हमारा प्रयास होगा न्याय पंचायतों से आगे बढ़कर हम प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर तक युग संदेश पहुँचाने में समर्थ हो सकें। इसके लिए हमें कुछ इस प्रकार के संकल्प अभी से करने होंगे।

➲प्रत्येक यज्ञायोजन के साथ जुड़े नर-नारियों में से हम कम से कम कितनों को उपासना, जीवन साधना और लोक आराधना से जोड़ देंगे? उसके क्रमिक विकास के लिए उनसे नियमित सम्पर्क बनाने तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन, सहयोग देते रहने का तंत्र अवश्य विकसित करेंगे। उन्हीं के सहयोग से हम न्याय पंचायतों से कई गुनी ग्राम पंचायतों तक अपनी पैठ बना सकेंगे।

➲**युग साहित्य :-** मिशन की पत्रिकाओं एवं विद्या-विस्तार सैटों की स्थापना के माध्यम से जो बहिन-भाई जुड़े हैं, उन्हें स्वाध्याय के लिए प्रेरित करके, उनसे बार-बार चर्चा-सत्संग करके उनके अन्दर विचार क्रान्ति के बीजों को स्थापित करने, उन्हें प्रस्फुटित,पल्लवित, फलित करने-कराने की साधना में हममें से कितने लोग लगेंगे? इसके लिए अपने अध्ययन एवं लोक व्यवहार को कितना प्रभावी बनायेंगे?

➲हमारी प्रवृत्तियों में ऐसा परिवर्तन आये कि हम प्रचार-प्रसार के अनुपात में व्यक्ति निर्माण जैसी सृजनात्मकता को पर्याप्त महत्व देने लगें। हम युगऋषि के प्रचार सहायक से आगे बढ़कर उनके सृजन सहयोगी बनने में समर्थ हो सकें।

यदि हम उक्त संकल्पों को ठीक स्वरूप दे सकें, तो दिव्य अनुदानों की वर्षा का समुचित लाभ अवश्य उठा सकने की हमारी पात्रता निश्चित रूप से बढ़ेगी।

पात्रता का आकार और संस्कार

पात्रता के विकास की साधना में हमें उसके आकार और संस्कार, दोनों पर ध्यान देना होगा। आकार के बारे में तो अधिकांश की दृष्टि साफ होती है; जितना बड़ा पात्र होगा, उतना ही हम पा सकेंगे। संत तुलसीदास जी ने ठीक ही लिखा है-

कर्म कमण्डल कर गहे, तुलसी जहाँ लग जाय।
सरिता, सागर, कूप जल बूँद न अधिक समाय॥

पूज्य गुरुदेव के उदाहरण भी इस संदर्भ में ध्यान देने योग्य है। वे कहते हैं कि कोई उदार दाता बड़ा टोकना भरके हमें अनाज देने आये और हम उसके सामने रूमाल बिछाकर कहें कि लाओ सब दे दो, तो क्या वह दे सकेगा? यदि बड़ी चादर बिछा दें, तो वह अवश्य पूरा टोकरा उड़ेल देगा। अस्तु पात्रता का आकार तो बढ़ना ही चाहिए, लेकिन बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती; उसका संस्कार भी तो ठीक होना चाहिए। इस बात को कम ही लोग ध्यान में रख पाते हैं। इसे यो समझें-

➤हम पानी का बड़ा पात्र ले आयें, लेकिन उसमें छेद या दरारें हों, तो पानी उसमें कैसे टिकेगा? अच्छा है कि पात्र भले ही छोटा लाएँ, किन्तु चोखा लाएँ। उसमें छेद या दरारें न हों।

➤यदि पात्र मिट्टी का है, उसमें छेद भी नहीं है, किन्तु वह पका नहीं है, तो उसमें पानी डालने पर क्या होगा? यदि हम उसे पका हुआ दिखाने के लिए रंगकर ले आयें, तो भी क्या होने वाला है?

➤यदि पानी के स्थान पर तेजाब लेना हो और हम जस्ते का अखण्डित पात्र लेकर पहुँच जायें, तो क्या वह तेजाब को सुरक्षित रख सकेगा? तेजाब से वह गल जायेगा और सारा तेजाब बह जायेगा।

अस्तु हमारे संकल्पों का आकार बढ़े यह तो अच्छा है, किन्तु उससे भी ज्यादा जरूरी यह है कि उसका संस्कार भी अच्छा हो। दोनों का तालमेल बैठता रहे, तो बात बन जायेगी। पू.गुरुदेव ने बार-बार 'पात्रता और प्रामाणिकता' की बात दोहराई है। इसमें पात्रता से उसका आकार और प्रामाणिकता से उसका संस्कार अच्छा होने का आशय समझना चाहिए। दोनों का स्तर बढ़ाने के लिए कमर कसनी चाहिए।

स्तर बढ़ता रहे

यह सच है कि हमने किन्हीं अर्थों में अपनी पात्रता सिद्ध की है और उस आधार पर अनुदान पाये भी हैं। ऐसा न होता, तो सीमित संसाधनों में हमारे आयोजन किस तरह कीर्तिमान स्थापित कर लेते? हमने जो किया वह संतोषप्रद कहा जा सकता है, किन्तु अभी जो करना है, वह पहले की अपेक्षा अधिक शानदार है, उच्चस्तरीय है। उच्चस्तरीय कार्य के लिए उच्च स्तरीय अनुदानों की व्यवस्था तो ऋषिसत्ता करेगी, किन्तु उन्हें प्राप्त करने तथा प्रयुक्त करने की उच्च स्तरीय पात्रता-प्रामाणिकता तो हमें व्यक्तिगत स्तर पर और संगठित इकाइयों के स्तर पर भी विकसित करनी ही होगी।

संकल्पों का आकार बढ़ाने का उत्साह तो बहुतों में उभरता है, किन्तु संस्कार बढ़ाने का उत्साह भी तो उभरना चाहिए। केवल आकार बढ़ाने से सामयिक रूप से थोड़ी वाहवाही मिल भी सकती है, किन्तु संस्कार बढ़ाने से ही स्थाई श्रेय-संतोष की प्रगति संभव है। अस्तु, आकार के साथ संस्कार भी बढ़ते रहें, यह बात ध्यान में रखनी है।

प्रत्येक सफलता के साथ प्रसन्नता अनुभव हो सकती है; और होनी भी चाहिए। किन्तु यह भी ध्यान रहे कि प्रत्येक सफलता के बाद अगले चरण की परीक्षा पार करने की चुनौती भी सामने आ जाती है। इसलिए हर सफलता के बाद कार्य-साधना का स्तर बढ़ता है। उसके लिए अपेक्षाकृत उच्च स्तरीय अनुदानों की जरूरत भी होती है। उनको प्राप्त करने के लिए पात्रता को भी पहले की अपेक्षा अधिक उच्चस्तरीय बनाना होता है। इसके लिए ऋषिसत्ता, गुरुसत्ता सहायता तो करती है, किन्तु उसे प्राप्त करने का संकल्प और पुरुषार्थ तो साधकों को ही करना होता है।

प्रस्तुत वसंत पर्व अपने साथ समय के अनुरूप श्रेष्ठतर अनुदान लेकर आया है। हम अपने संकल्पों को उसके लिए उन्नत करें।

कुछ यों सोचें और करें

हम उन भाग्यशालियों में से हैं, जिन्हें युग सृजन की इस महत्त्वपूर्ण वेला में कुछ करने के लिए चुना गया है। इस चुनाव के पीछे हमारे पिछले जन्म या कर्मों के पुण्य रहे होगें। वह पुण्य हमें अपनी तप साधना और गुरुकृपा के संयोग से प्राप्त हुए होंगे। हमें अपने तप और गुरु के अनुग्रह को यों ही नहीं जाने देना है। परीक्षा की कसौटी पर पहले से अधिक खरा सिद्ध होना है।

💧हमारे संकल्पों में प्रचारात्मक लक्ष्यों के साथ सृजनात्मक लक्ष्य शामिल होने चाहिए।

💧व्यक्तिगत स्तर पर गहन चिंतन करें कि हमारी समझदारी का स्तर बढ़ क्यों नहीं रहा है? हम परिस्थितियों का बहाना बनाकर रुक-रुक क्यों जाते हैं? इन्हीं परिस्थितियों में बेहतर कुछ करने की समझ हमारे अन्दर क्यों नहीं उभर रही है? हम बच्चों की तरह परिस्थितियों की अनुकूलता की कामना लिए क्यों बैठे हैं? अपनी प्रचंड मनोभूमि से परिस्थितियों को बदलने का उत्साह हममें क्यों नहीं आता?

💧हमारे इर्द-गिर्द, गुरुकार्य में रुचि रखने वाले कितने लोग हैं? हम उनके उत्साह और कौशल को बढ़ाने के लिए क्या बेहतर कर सकते हैं? हम लोगों के दोषों को ही महत्त्व दे कर क्यों अटक जाते हैं, उनके गुणों को पहचान कर उनका सदुपयोग कर लेने का कौशल हमारे अन्दर क्यों नहीं उभरता?

💧सामूहिक रूप से विचार करें कि हम एक-दूसरे के गुणों का मूल्यांकन और विकास करके, उन्हें एकजुट करके दुर्गाशक्ति की एक सबल इकाई कैसे पैदा करें। इसी से हम व्यक्तिगत कमियों की पूर्ति करते हुए आगे बढते रह सकेंगे।

💧समझदारी से परिस्थितियों का मूल्यांकन करें, अवसर की महत्ता पहचानें और ईमानदारी से अपनी शक्तियों के विकास और सुनियोजन की योजना बनाएँ। जो कार्य सामने हैं, उन्हें जिम्मेदारी के साथ हाथ में लेने और बहादुरी के साथ पूरा करने के सकंल्प लें।

💧परिस्थितियों को ठीक करने की बहादुरी के साथ अपनी मन:स्थितियों के दोष पहचानकर, स्वीकार करके उन्हें दूर करने की बहादुरी भी विकसित करनी होगी।

💧इस प्रकार विचार और कार्यों की श्रृंखला आगे बढ़ाने के प्रयास शुरू होते ही युगशक्ति के श्रेष्ठतर अनुदानों का संचार शुरू हो जायगा।

आइये! हम सब चूकें नहीं, अवसर का पूरा-पूरा लाभ उठाएँ और जीवन धन्य बनाएँ। ☯

आत्मविकास का आदर्श-ग्राम राजसमढ़ियाड़ा

गुजरात के राजकोट शहर से लगभग ३० कि.मी. की दूरी पर बसा है एक छोटा-सा गाँव राजसमढ़ियाड़ा; बिलकुल साफ-सुथरा, समृद्ध और निरंतर विकासशील। इस छोटे से गाँव की कुल आबादी है मात्र १७०० और वार्षिक आय पाँच करोड़ रुपये। अर्थात् प्रति लगभग ३० हजार रुपये प्रति व्यक्ति आय है इस गाँव के लोगों की।

राजसमढ़ियाड़ा गाँव का प्रत्येक व्यक्ति गाँव की विकास समिति के चेअरमेन श्री हरदेव सिंह जाडेजा ने नियम कानूनों का पालन करता है। उन्हीं के निर्णय के अनुसार पिछले दो वर्षो से गाँव में दीवाली पर एक भी पटाखा नहीं फोड़ा गया, यहाँ तक कि छोटे बच्चों ने चिटपटी तक नहीं चलायी। गाँव का नया नियम था कि एक पटाखा फोड़ने पर ५१ रु. दण्ड देना होगा।

पिछले २५ वर्ष के प्रयासों से गाँव की काया पलट देने वाले ५२ वर्षीय श्री हरदेव जी ने अपने गाँव में ऐसे कई प्रगतिशील नियम बना रखे हैं, जिनका कड़ाई से पालन हो रहा है। गाँव का नियम है कि अपने मवेशियों पर नियंत्रण रखना मालिक की जिम्मेदारी है। यदि वे किसी की खेती को नुकसान पहुँचाते हैं तो उसके लिए हर्जाना देना होगा। नियम सबके लिए बराबर हैं। इस नियम के अंतर्गत श्री जाडेजा जी स्वयं भी पाँच हजार रुपये दण्ड दे चुके हैं।

गाँव के कुछ और भी कानून हैं। गुटका खाने वाले अथवा बेचने वाले को ५१ रु. दण्ड, मतदान न करने वाले को ५१ रु. दण्ड, शराब पीने वाले को १५१ रु. दण्ड, जुआ खेलने वाले को २५१ रु. दण्ड, ग्राम पंचायत से बिना पूछे पुलिस स्टेशन या कोर्ट में जाने वाले को ५०१ रु. दण्ड, क्योंकि यदि पुलिस गाँव में आती है तो गाँव की साख बिगड़ती है। यह सभी दण्ड ग्राम पंचायत में जमा करना होता है। सरपंच श्री देवशीभाई काकड़िया भी मानते हैं कि सुख-समृद्धि और विकास के रास्ते पर जाना है तो जवाबदारी का बोध तो होना ही चाहिए।

श्री हरिदेव सिंह जाडेजा पहले सीआरपीएफ के सब इंस्पेक्टर बनना चाहते थे। तब गाँव वासियों ने उन्हें सरपंच बनाना चाहा। जाडेजा जी ने भी महसूस किया कि वे गाँव में रहकर ही अपनी योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन कर सकते हैं। पिछले २५ वर्षों में उन्होंने जल संग्रहण, आधुनिक सिंचाई, उन्नत कृषि, ग्राम सफाई आदि की कई प्रगतिशील योजनाएँ लागू कर अपने गाँव को आत्म विकास का एक आदर्श बना दिया। इस छोटे-से गाँव में पाँच एकड़ भूमि पर क्रिकेट की टर्फ विकेट भी है। गाँव के बच्चों को क्रिकेट सिखाने राजकोट से कोच आता है, जिसका वेतन ग्राम पंचायत देती है।

पटाखों पर प्रतिबंध के विषय में श्री हरदेव सिंह का कहना है कि उनके गाँव में प्रतिवर्ष डेढ़ लाख रुपये की बरबादी पटाखों पर होती थी। इससे वातावरण प्रदूषण, सर्दी-खाँसी की बीमारी और छोटी-मोटी घटनाएँ तो आम बात थी, खेत-खलिहानों, घर में आग लगने का खतरा भी रहता था। पिछले दो वर्षों से इस नियम का पालन हो रहा है। पिछले वर्ष एक नवयुवक ने नियम की अवहेलना की थी तो उसे दण्ड देना पड़ा। इस वर्ष उसे बुलाकर पहले ही बता दिया गया कि नियम तोड़ोगे तो गाँव की क्रिकेट टीम से निकाल दिये जाओगे।

श्री जाडेजा राजकोट तालुका पंचायत के प्रमुख भी हैं। उनकी सूझबूझ भरी पहल ने गाँव की काया पलटकर सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है।

संसार में सच्चा सुख ईश्वर और धर्म पर विश्वास रखते हुए पूर्ण परिश्रम के साथ अपना कर्त्तव्य पालन करने में है।